सारांश

- बचपन में गांधीजी को प्यार से सभी मोहन के स्थान पर मोनिया कहते थे। पेड़ पर चढ़ना उसका शौक था। घर के लोगों को पेड़ से मोनिया के गिरने का डर लगता किंतु वह निर्भीक था। एक दिन वह अमरूद के पेड़ पर चढ़ गया। वह नीचे उतरता इसके पहले ही उसके बड़े भाई वहां आ गए।

- उन्होंने उसे पेड़ पर चढ़े देखा, तो नाराज होकर उसे दो-चार थप्पड़ रसीद कर दिया। मोनिया रोते हुए मां के पास पहुँचा और बोला - "मां! भाई ने मुझे मारा।" मां ने सहज भाव से कह दिया - "जा तू भी उसे मार आ। मां के ऐसा ही वह गंभीर होकर बोला - "ऐसा तुम कहती हो मां? मैं अपने बड़े भाई पर हाथ उठाऊँ? मां ने हंसते हुए कहा - तो क्या हुआ? भाई बहनों में तो लड़ाई-झगड़ा होती ही रहती है। मोनिया तत्काल मां की बात काटते हुए बोला - "तुम गलत हो मां, जो बड़े को मारने की सीख देती हो। भाई मुझसे बड़े है।

- वे भले मार मुझे मार लें, किंतु मैं उन्हें नहीं मारूंगा।' मां यह सुनकर चकित रह गई। उन्होंने तो बड़े भाई को मारने की बात साधारण रूप में कह दी थी। मोनिया ने फिर कहा - 'मां! जो मारता है, उसे तुम क्यों नहीं रोकती? तुम्हें उससे कहना चाहिए कि वह नहीं मारे, न कि मार खाने वाले से कहना चाहिए कि वह बड़े भाई की मारे।" अपने पुत्र पवित्र हृदय पर मां का सीना गर्व से फूल उठा। वे मोनिया को गले लगाकर बोली - 'बेटा।

- तूने इतनी अच्छी बातें कहां से सीखी? मालूम नहीं कि ईश्वर ने ~~मोहे~~ तेरे लिए क्या भाग्य रचा है?" आगे चलकर इसी मोनिया ने महात्मा गांधी के रूप में न केवल अपने देश, बल्कि विदेशों में भी अगाध श्रद्धा पाई और आज वे विदेश के महान आदर्श माने जाते हैं। सार यह है कि बड़ों का सम्मान छोटों का कर्तव्य है, किंतु इसकी शिक्षा बड़ों को अपने आचरण के द्वारा छोटों को देनी चाहिए